कोल्हू में पिस रहे उप्र के गन्ना किसान

वीरेंद्र सिंह रावत
लखनऊ, 4 नवंबर

उत्तर प्रदेश में गन्ने की पेराई पर तस्वीर अभी तक साफ नहीं हो सकी है। इसीलिए राज्य के पश्चिमी जिलों के किसान अपनी गन्ने की फसल कोल्हुओं (गुड़ बनाने वाली इकाई) पर 160 रुपये से 250 रुपये प्रति क्विंटल कीमत पर बेचने को मजबूर हैं। चीनी मिलों के उलट कोल्हू किसानों को गन्ने का मोल हाथोहाथ देते हैं, इसलिए मुजफ्फरनगर, शामली, बागपत, मेरठ और बिजनौर में कोल्हुओं के बाहर किसानों की लंबी-लंबी कतार दिख रही हैं।

पश्चिमी और मध्य उत्तर प्रदेश में लगभग 1575 कोल्हू हैं। किसानों को त्योहारों के दौरान नकदी की जरूरत होती है, इसलिए मजबूरी में वे कोल्हू पर अपनी फसल बेचने को मजबूर हैं। निजी चीनी मिलों पर 2012-13 का गन्ने का 2,400 करोड़ रुपये का बकाया है, जिससे साफ जाहिर होता है कि गन्ना किसानों को इस वक्त पैसे की काफी जरूरत है। किसान जागृति मंच के अध्यक्ष सुधीर पंवार ने बिज़नेस स्टैंडर्ड को बताया, 'किसानों को पशुओं के लिए चारे की बहुत जरूरत है क्योंकि इस वक्त तक ज्वार की फसल खत्म होने लगती है। इसके अलावा गन्ने के मूल्य और पेराई सत्र के बारे में भी अभी तक कुछ साफ नहीं हो सका है।' मुजफ्फरनगर में सांप्रदायिक तनाव के चलते कई कोल्हू काम नहीं कर रहे हैं, इसलिए किसान कोल्हुओं पर ही गन्ना बेच रहे हैं। इस कारण उन्हें गन्ने की कीमत भी कम मिल रही है। निजी चीनी मिलें पेराई शुरू करने से पहले राज्य द्वारा गन्ना मूल्य घोषित करने की मांग पर अड़ी हुई हैं। वे चाहती हैं कि अगर सरकार 240 रुपये प्रति क्विंटल से ज्यादा कीमत रखती है और बाकी कीमत सरकार से ही सब्सिडी की शक्ल में मिले। इधर स्थानीय मंडियों में गुड़ की आमद में 50 फीसदी तक की गिरावट आ चुकी है। पंवार ने बताया, 'बीते साल शामली में रोजाना 3200 क्विंटल गुड़ पहुंचा था। इस साल आंकड़ा 1600 क्विंटल ही रह गया है।'

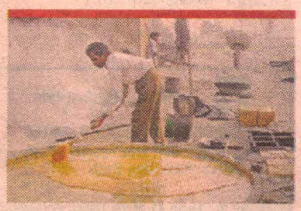

बिगड़ा स्वाद

- चीनी मिलों में अभी तक शुरू नहीं हुई पेराई
- औने-पौने दाम पर गन्ना बेचने को मजबूर किसान

Business Standard
5/11/13